॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

अग्नि सूक्त

विषय-सूची

अग्निसूक्त – ऋग्वेद 3
अग्निसूक्त – सामवेद..... 6

अग्निसूक्त – ऋग्वेद

ऋग्वेद १।१

अग्नि' वैदिक यज्ञ-प्रक्रियाके मूल आधार तथा पृथ्वीस्थानीय देव हैं। वेदों में अग्निदेवताका विशेष महत्त्व है। केवल ऋग्वेद संहिता में लगभग दो सौ सूक्त अग्निदेव के स्तवन में पाए जाते हैं। इनका 'जातवेद' नाम इनकी विशेषता का द्योतक है। इस सूक्तके ऋषि वैश्वामित्र मधुच्छन्दा हैं, देवता अग्नि हैं तथा छन्द गायत्री है। ऋग्वेद ले प्रथम मंडल का प्रथम सूक्त होने के कारण इस सूक्त का विशेष महत्त्व प्रतिपादित है।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विज़म्। होतारं रत्नधातमम् ॥१॥

सबका हित करनेवाले, यज्ञों के प्रकाशक, सदा अनुकूल यज्ञ कर्म करनेवाले, विद्वानों के सहायक अग्नि की मैं प्रशंसा करता हूँ ॥१॥

अग्निः पूर्वेभिऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति ॥२॥

सदैव से प्रशंसित अग्निदेव का आवाहन करते हैं। अग्नि के द्वारा ही देवता शरी रमें प्रतिष्ठित रहते हैं। शरी रसे अग्निदेव के निकल जानेपर समस्त देव इस शरीरको त्याग देते हैं ॥२॥

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम् ॥३॥

अग्नि ही पुष्टिकारक, बलयुक्त और यशस्वी अन्न प्रदान करते हैं। अग्नि से ही पोषण होता है, यश बढ़ता है और वीरता से धन प्राप्त होता है ॥३॥

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद् देवेषु गच्छति ॥४॥

हे अग्नि! जिस हिंसारहित यज्ञ को सब ओर से आप सफल बनाते हैं, वहीं देवों के समीप पहुँचता है ॥४॥

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवे-भिरा। गमत् ॥५॥

देवों का आवाहन करने वाला, यज्ञ-निष्पादक, ज्ञानियों की कर्मशक्ति का प्रेरक, सत्य परायण, विविध रूपोंवाला और अतिशय कीर्तियुक्त यह तेजस्वी अग्नि देवों के साथ इस यज्ञमें आये हैं ॥५॥

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत् । तत् सत्य-मङ्गिरः ॥६॥

हे अग्नि! आप दानशील का कल्याण करते हैं। हे शरीर में व्यापक अग्नि! यह आपका निःसंदेह एक सत्यकर्म है ॥६॥

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तधिया वयम्। नमो भरन्त एमसि ॥७॥

हे अग्नि! प्रतिदिन दिन और रात बुद्धिपूर्वक नमस्कार करते हुए हम आपके समीप आते हैं अर्थात् अपनी स्तुतियों द्वारा हमेशा उस प्रकाशक एवं तेजस्वी अग्नि का गुणगान करना चाहिये, दिन और रात्रि के समय उनको सदा प्रणाम करना चाहिये ॥७॥

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं दमे ॥८॥

दीप्यमान, हिंसारहित यज्ञों के रक्षक, अटल-सत्य के प्रकाशक और अपने घर में बढ़ने वाले अग्नि के पास हम नमस्कार करते हुए आते हैं। ॥८॥

स नः पितेव सूनवे ऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा स्वस्तये ॥९॥

हे अग्नि! जिस प्रकार पिता पुत्र के कल्याणकारी काम में सहायक होता है, उसी प्रकार आप हमारे कल्याणमें सहायक हों ॥९॥

अग्निसूक्त – सामवेद

सामवेद, पूर्वार्चिक, आग्नेयपर्व १२।१-८

अग्नि को सभी देवताओं का मुख बताया गया है क्योंकि अग्नि के द्वारा ही विश्वब्रह्माण्ड में जीवन, गति और ऊर्जाका संचार सम्भव होता है और अग्नि में आहूत की गयी आहुतियाँ हविद्रव्य के रूप में देवताओं को प्राप्त होती हैं। सामवेदके पूर्वाचिक का आग्नेयपर्व अग्नि की महिमा एवं स्तुति में पर्यवसित है।

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये ॥१॥

हे स्तोताओ! आप श्रेष्ठ स्तोत्रोंद्वारा अग्निदेवकी स्तुति करें। वे महान् सत्य और यज्ञके पालक, महान् तेजस्वी और रक्षक हैं ॥१॥

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः । यस्य सख्यमाविथ ॥२॥

हे अग्निदेव! आप जिसके मित्र बनकर सहयोग करते हैं, वे स्तोतागण आपसे श्रेष्ठ संतान, अन्न, बल आदि समृद्धि प्राप्त करते हैं ॥२॥

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे ॥३॥

हे स्तोताओ ! स्वर्ग के लिये हवि पहुँचाने वाले अग्निदेव की स्तुति करो। याजकगण स्तुति करते हैं और देवताओं को हवनीय द्रव्य पहुँचाते हैं ॥३॥

मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः। सुहोता स्वध्वरः ॥४॥

हमारे प्रिय अतिथि स्वरूप अग्निदेव को यज्ञ से दूर मत ले जाओ। वे देवताओं को बुलानेवाले, धनदाता एवं अनेक मनुष्यों द्वारा स्तुत्य हैं ॥४॥

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः ॥५॥

हवियों से संतुष्ट हुए हे अग्निदेव! आप हमारे लिये मंगलकारी हों। हे ऐश्वर्यशाली ! हमें कल्याणकारी धन प्राप्त हो और स्तुतियाँ हमारे लिये मंगलमयी हों ॥५॥

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्यम् । अस्य सुक्रतुम् ॥६॥

हे देवाधिदेव अग्ने ! आप श्रेष्ठ याज्ञिक हैं। इस यज्ञ को भली प्रकार सम्पन्न करनेवाले हैं। हम आपकी स्तुति करते हैं ॥६॥

तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम्। मन्यु जनस्य दूढ्यम् ॥ ७॥

हे अग्ने! आप हमें प्रखर तेज प्रदान करें, जिससे यज्ञ में आनेवाले अतिभोगी दुष्टोंको नियन्त्रित किया जा सके। साथ ही आप दुर्बुद्धियुक्त जनों के क्रोध को भी दूर करें ॥७॥

यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे। विश्वेदग्निः प्रतिरक्षांसि सेधति ॥८॥

यजमानों के रक्षक, हविष्यान्न से प्रदीप्त अग्निदेव प्रसन्न होकर याजकों के यहाँ प्रतिष्ठित होते तथा सभी दुष्ट-दुराचारियों का विनाश करते हैं ॥८॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।